Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-17, Issue-2, September-2023
www.researchguru.net

असहयोग आन्दोलन - एक विवेचन

Dr. Geeta Bhut
Assistant pro. Sanskrit, Kavi Shree Daad Government Arts and commerce college, paddhari, Mo. 9879311301, Email: bhut.geeta@gmail.com

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में महात्मा गांधीजी ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हैं। सत्य और अहिंसा के माध्यम से महात्मा गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा और छोडो भारत इन आन्दोलनों में से नवचेतना, राष्ट्रीय एकात्मता और राष्ट्रवाद का दर्शन पूरे भारतवासीयों को कराया। महात्मा गांधीजी के द्वारा किये गये आन्दोलन के चलते ब्रिटीश सरकार पर बहुत बड़ी मात्रा में दबाव निर्माण हो गया, उन के राज की नींव ही हिल गई। साथ ही असहयोग आन्दोलन के पहले चम्पारण, खेडा आदि सत्याग्रह आन्दोलन द्वारा भारतीय किसान, मजदूर वर्ग के मुलभूत समस्याओंका हल निकालने का प्रयास भी उन्होंने किया था। अगस्त १९२० में लोकमान्य तिलक जी का देहान्त हुआ और राष्ट्रीय कांग्रेस का तथा ब्रिटीश सरकार के खिलाफ देश के जनआन्दोलन का शीर्ष नेतृत्त्व महात्मा गांधीजी के पास आ गया। लोकमान्य तिलक जी के पुण्यस्मृति में राष्ट्रीय कांग्रेसने एक करोड रूपये का फण्ड इकट्ठा करने का निर्णय लिया और इस चंदे का नाम फण्ड' रखा गया। इतनी बड़ी रकम को इकट्ठा करने का काम महात्मा गांधीजी के पास आ गया और उन्होंने पुरे देश का दौरा करते हुए भारतीय जनता को इस संदर्भ में आवाहन किया। लोगो ने मुक्तहस्त से अपनी ओर से पाई-पाई पैसा दे दिया और सभी की सहायता से एक करोड की राशि इकट्ठा भी हो गयी। साथ ही महात्मा गांधीजीने खिलाफत आन्दोलन को सहमति देकर हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

रौलट एक्ट, हंटर समिति, जालियाँवाला बाग, प्रथम विश्व महायुध्द और हानी आदि घटनाओं के चलते इस के लिए जिम्मेदा ब्रिटीश सरकार के खिलाफ असहयोग आन्दोलन की शुरूआत महा गांधीजी ने कि शुरू में तो यह शब्द लोगों के ध्यान में नहीं आय। किन्तु दो - चार माह के पश्चात् देश के कोने-कोने में असह आन्दोलन का नारा गुँजने लगा। इस असहयोग आन्दोलन के विषयपर चर्चा करने के लिए सितम्बर १९२० में कलकत्ता में राष्ट्रीय कांग्रेस के विशेष अधिवेशन का आयोजन हुआ। लाला लजपतराय जी अधिवेशन के अध्यक्ष के रूप में चुने गये। कलकत्ता में नेताओं और जनता का विशाल समुदाय एकत्रित हुआ। ऐनी बेसेंट, महामना मालवीय, श्री विजयराघवाचारी, पण्डित मोतीलाल नेहरू, देशबंधू चित्तरंजनदास आदि कई दिग्गज नेता मंच पर उपस्थित थे। महात्मा गांधीजी ने अपने विचार में असहयोग का उल्लेख किया। सभी मान्यवर महोदयोंकी विस्तार से चर्चा के बाद असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव स्वीकार किया गया। सबसे पहले मोतीलाल नेहरूजी ने अहिंसक असहयोग आन्दोलन के प्रस्ताव को अपनाया। विशेष अधिवेशन में स्वीकृत इस प्रस्ताव को दिसम्बर १९२० के नागपूर के वार्षिक आम अधिवेशन में विधिवत् पारित किया गया। नागपूर के अधिवेशन के अध्यक्ष श्री विजयराघवाचारी जी थे। महात्मा गांधीजी का सुझाव था कि, स्वराज पाना हम देशवासियों का अंतिम लक्ष्य हैं किन्तु स्वराज प्राप्ति का मार्ग पूर्ण रूप से अहिंसक ही होना चाहिए।

सितम्बर और दिसम्बर १९२० के विस्तार चर्चा और प्रयासों के चलते शुरु हुए असहयोग आन्दोलन का स्वागत पूरे देशवासियों ने बडी उत्साह में किया। महात्मा गांधीजी और अन्य नेताओं ने पूरे देश में जगह-जगह घूमकर लोगों को इस के बारे में जानकारी दी। अपनी घर गृहस्थी, परिवार छोडकर अनेक महिला और पुरूषोंने देश की गलियों में घूमकर सरकार के खिलाफ प्रचार और प्रसार किया, नारा दिया। असहयोग आन्दोलन में स्वदेशी का पुरस्कार, मद्यपान निषेध, जातिप्रथा निर्मूलन, हिन्दू और

मुस्लिम एकता, लोकमान्य तिलक जी के पुण्यस्मृति में एक करोड रूपये का फण्ड इकट्ठा करने आदी के साथ ही सरकारी न्याय और कानून व्यवस्थापर बहिष्कार, विदेशी वस्तुओंका त्याग, सरकारी नोकरी और पदवी-सन्मान का त्याग, सरकारी कचेहरी-स्कूल-कॉलेज आदि पर बहिष्कार डाला गया। विदेशी कपडों की सार्वजनिक होली जलाई जाने लगी। शराब की दुकानों के सामने महिलाओं ने धरना दिया। देश की एकता के लिए सभी वर्ग के लोगों द्वारा एकजूट का प्रदर्शन शुरु हुआ। जिस जगह पर महात्मा गांधीजी जाते थे वहाँ पर उन्हें सुनने बड़ी भीड़ उमड पडतं थी। अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग नेताओं ने इस आन्दोल का नेतृत्त्व किया।

बंगाल में देशबंधू चित्तरंजनदासजी ने अपनी बड़ी आय की वकालत छोड़कर स्वयम् का मकान और सम्पत्ति देश को दान स्वरूप में दे दी। इस महनीय कार्य में देशबंधू चित्तरंजनदासजी की धर्मपत्नि ने भी डरकर साथ दिया। देशबंधू चित्तरंजनदासजी के इस त्याग ने पूरे बंगाल में देशभक्ति और जनजागृती का माहौल छा गया। बिहार में राजेन्द्रबाबू ने अपनी बड़ी जमींदारी न्योछावर कर दी। इलाहाबाद में पण्डित मोतीलाल नेहरू जी ने अपनी बड़ी आय की वकालत छोड़कर असहयोग आन्दोलन और देशसेवा में जुड़ गये। पंजाब में लाला लजपतराय जी ने अपनी सम्पत्ति छोड़कर स्वराज कार्य में स्वयम् को शामिल किया। राजाजी, सरदार पटेलजी, सेठ जमनालालजी बजाज, सरोजिनी नायडू आदि कई अनगिनत नेतागण और विभिन्न प्रांत की आम जनता ने अपना सर्वस्व त्याग कर के देश के लिए असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े सन १९२१ में पूरे देश में असहयोग आन्दोलन की जड़ें और भी बड़ी मात्रा में मजबूत हो गयी।

असहयोग आन्दोलन में अपना सहयोग देते हुए हजारों कि तादाद में छात्रों ने अपनी शिक्षा छोड़ दी। देश का युवक साक्षर होना बहुत महत्त्वपूर्ण है और इसलिए देशी शिक्षा की व्यवस्था करना आवश्यक था। उस समय पूरे भारत में कई जगहोंपर देशी स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय की स्थापना हो गयी। वाराणसी में काशी विश्वविद्यालय, पूना में तिलक विश्वविद्यालय, दिल्ली में जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय आदि कई विश्वविद्यालयों की स्थापना असहयोग आन्दोलन के चलते हो गयी। स्वतंत्रता संग्राम के लिए इन शैक्षिक संस्थाओं ने देश के लिए मर मिटनेवाली युवा पिढी का निर्माण किया।

असहयोग आन्दोलन की वजह से अंग्रेज सरकार पर काफी दबाव हावी हो गया। भारत में चल रहे इस असहयोग आन्दोलन की चर्चा और समाचार पत्र की सुर्खियाँ इंग्लैंड में भी आने लगी। खादी का काफी बडी मात्रा में देशभर प्रचार और प्रसार हो गया। नवंबर १९२१ में मुंबई में इंग्लैंड की राजकुमार के आगमन समय असहयोग आन्दोलन सीमा पर था। इसी माहौल में राष्ट्रीय कांग्रेस का दिसम्बर में होनेवाला वार्षिक आम अधिवेशन आ गया। गुजरात के अहमदाबाद में दिसम्बर १९२१ के राष्ट्रीय कांग्रेस के आम अधिवेशन के अध्यक्ष के रूप में देशबंधु चितरंजनदासजी चुने गये। सरदार वल्लभभाईजी पटेल स्वागत समिती के अध्यक्ष थे। असहयोग आन्दोलन और अहमदाबाद में राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन का वातावरण देखकर ब्रिटीश सरकारने अधिवेशन जा रहें देशबंधू चित्तरंजनदासजी को गिरफ्तार किया। इस से देशवासियों का उत्साह ठंडा पड जायेगा, असहयोग आन्दोलन में बाधा आयेगी ऐसा सरकारी पक्ष को लगा किन्तु उनकी सोच तो सोच ही रह गई। अध्यक्ष पद पर विराजमान देशबंधू मित्तरंजनदासजी के पकड़े जाने पर दिल्ली के हकीम अजमलखानजी को अहमदाबाद राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन का अध्यक्ष चुना गया और उनके अध्यक्षता में आम अधिवेशन संपन्न भी हुआ।

ब्रिटीश सरकारने देश के सभी प्रांतों से शीर्ष नेताओं को और आम लोगों को भी बड़ी मात्रा में गिरफ्तार कर विभिन्न जगह के कारागृह में बंदिस्त किया। सरकार की इस तानाशहा निति का असहयोग आन्दोलन पर कुछ भी असर न हुआ असहयोग आन्दोलन अब भारत में लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचा था। ०१ फरवरी १९२२ में महात्मा गांधीजी ने वाईसराय रिडींग को बार्डोली सत्याग्रह का इशारा दे दिया। ऐसे में ही चौरीचौरा दुर्घटना घटी ५ फरवरी १९२२ में

उत्तरप्रदेश में गोरखपूर के पास चौरीचौरा गाँव में असहयोग आन्दोलन को लेकर एक स्थानीय लोंगों का अहिंसक जूलूस चल पड़ा था अहिंसक जूलूस और स्थानिय पुलिस कर्मीयोंके बीच आपसी नोंक–झोंक होने की वजह से दोनों गुटों में हिंसक वातावरण निर्माण हो गया। लोगों ने पुलिस कचेहरी को आग लगा दी जिसमें कई पुलिसकर्मी जलकर मर गये। अबतक अहिंसा मार्ग से चल रहे असहयोग आन्दोलन ने हिंसा का रूप धारण किया। महात्मा गांधीजी इस हिंसक घटना को सुनकर काफी व्यथित हो गये। अहिंसक मार्ग पर चल रहा असहयोग आन्दोलन अगर बेकाबू होकर हिंसा में परिवर्तित हो गया तो सत्याग्रह का शक्तिपूँज नष्ट हो जायेगा। सरकार तो ऐसी ही कुछ घटना के प्रतिक्षा में थी। जनआन्दोलन ने किये हुए हिंसा से कई ज्यादा गुणा हिंसा और बल का प्रयोग कर उमड़ रही भीड को अंकुश में लाने हेतू सरकार तो तुरंत ही तैयार थी। लोगों पर अपनी निरंकुश सत्ता का कहर बरसाने से भविष्य में दोबारा ऐसी हिंसा अथवा ऐसे आन्दोलन में जुट जाने का दुःस्साहस जनता नहीं करेगी ऐसी देना ही उचित महसूस हुआ। उन के इस निर्णय को उन्ही के साँच में सरकार थी। महात्मा गांधीजी को अब सत्याग्रह स्थगित कर देना ही उचित महसूस हुआ। उनके इस निर्णय को उन्ही के सहयोगीयोंने असहमती दर्शायी। अंत में अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कमेटीने असहयोग आन्दोलन के स्थगिती को मान्यता दी। इस के बारे में महात्मा गांधीजीने 'यंग इंडिया' समाचार पत्र में विस्तार से लिख दिया।

ब्रिटीश सरकार पर हावी हो गये असहयोग आन्दोलन को किसी एक हिंसक घटना से स्थगित करना उचित नहीं था किन्तु महात्मा गांधीजी को परिस्थिती का अंदाज लग चुका था। सत्य और अहिंसा की साधना में क्षणिक भी असत्य और हिंसा का प्रवेश हो जाए तो सभी व्यर्थ हैं और साथ ही उसकी बड़ी किमत भविष्य में चुकानी पड़ सकती हैं। ब्रिटीश शासन के अत्याचारी बर्ताव को हिंसा से ही प्रतिजवाब देना अयोग्य था। सरकार के खिलाफ अहिंसक जनआन्दोलन तैयार किया जा सकता है अहिंसा का मार्ग स्वीकार करना यानी डर जाना ऐसा न होकर डटकर मुकाबला करना ही है। निरपराध लोगों पर अत्याचार कर रहे सरकार को सहयोग देना यानी सत्य की भर्त्सना करना हैं किन्तु अहिंसक मार्ग से ही स्वतंत्रता प्राप्त करना एकमात्र ध्येय हैं। हिंसा द्वारा प्राप्त किया स्वराज चिरकाल नहीं हो सकता अतः अहिंसा ही जीवन का श्रेष्ठतम एवम् बुनियादी मार्ग है महात्मा गांधीजी ने चौरीचौरा हिंसा का उत्तरदायित्त्व अपने कधे पर लेते हुए, अपने सभी साथियों को समझाकर असहयोग आन्दोलन स्थगित किया। तत्कालीक परिस्थिती को देखते हुए चौरीचौरा हिंसाकांड अगर न होता तो शायद सन १९२२ में ही हम भारतवासी आजादी का पर्व मनाते थे। भारतीय जनता के विराट प्रदर्शन से ब्रिटीश सरकार टूटकर बिखर जाती असहयोग आन्दोलन के पश्चात् सरकार द्वारा की जाने वाली राजनिति न होती। राष्ट्र में अमन, एकता और भाईचारा बना रहता। चौरीचौरा दुर्घटना से भारत के आगे के इतिहास में काफी बदलाव आया।

असहयोग आन्दोलन से अब तक नगरों तक सीमित कांग्रेस देहातों तक पहुँच गयी। असहयोग आन्दोलन से सरकार के तानाशाही का डर आम जनता के मन से चला गया। देश के लिए सबकुछ न्योच्छावर करने के लिए जनता तैयार हो गयी। असहयोग आन्दोलन स्थगित करने से सबसे बड़ा हादसा यह हुआ कि मार्च १९२२ सरकार द्वारा महात्मा गांधीजी को राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया में गया। अदालत में मुकदमा चल कर उन्हें छः वर्ष अवधि की कैद सुना दी गई। महात्मा गांधीजी कारावास में चले गए। महात्मा गांधीजी को सजा सुनाने वाले जज ब्रुमफिल्ड महोदय भी अपनी जगह खडे होकर क्षमा माँगते हुए सजा सुना दी। इस से महात्मा गांधीजी का महत्त्व और उनके प्रति आदर भाव व्यक्त होता है। भारत के समग्र स्वतंत्रता आन्दोलन में असहयोग आन्दोलन का अहम् योगदान है।

संदर्भग्रंथ सूची

१) सुमित्रा कुलकर्णी, अनमोल विरासत खण्ड ०२, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, १९८८

२) काकासाहेब कालेलकर, अहिंसा जीवन संस्कृति की नयी दिशा, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, १९८९

३) सोमनाथ शुक्ल, गांधीवादी समाजवाद, सर्वोदय विद्या संस्थान, कानपूर, १९९०

४) घनश्यामदास बिड़ला, मेरे जीवन में गांधीजी, सस्ता साहित्य प्रकाशन मण्डल, नई दिल्ली, १९७८